नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नमः

On Line – आगममंजूषा

[२०] कप्पवडिंसियाणं

* संकलन एवं प्रस्तुतकर्ता *

मुनि दीपरत्नसागर [M.Com., M.Ed., Ph.D.]

||किंचित् प्रास्ताविकम्||

ये आगम-मंजूषा का संपादन आजसे ७० वर्ष पूर्व अर्थात् वीर संवत २४६८, विक्रम संवत-१९९८, ई.स.1942 के दौरान हुआ था, जिनका संपादन पूज्य आगमोद्धारक आचार्यश्री आनंदसागरसूरिजी म.सा.ने किया था| आज तक उन्ही के प्रस्थापित-मार्ग की रोशनी में सब अपनी-अपनी दिशाएँ ढूंढते आगे बढ़ रहे हैं|

हम ७० साल के बाद आज ई.स.-2012,विक्रम संवत-२०६८,वीर संवत-२५३८ में वो ही आगम-मंजूषा को कुछ उपयोगी परिवर्तनों के साथ इंटरनेट के माध्यम से सर्वथा सर्वप्रथम “ OnLine-**आगममंजूषा** ” नाम से प्रस्तुत कर रहे हैं|

* मूल आगम-मंजूषा के संपादन की किंचित् भिन्नता का स्वीकार *

[१]आवश्यक सूत्र-(आगम-४०) में केवल मूल सूत्र नहीं है, मूल सूत्रों के साथ निर्युक्ति भी सामिल की गई है|

[२]जीतकल्प सूत्र-(आगम-३८) में भी केवल मूल सूत्र नहीं है, मूलसूत्रों के साथ भाष्य भी सामिल किया है|

[३]जीतकल्प सूत्र-(आगम-३८) का वैकल्पिक सूत्र जो “पंचकल्प” है, उनके भाष्य को यहाँ सामिल किया गया है|

[४] “ओघनिर्युक्ति”-(आगम-४१) के वैकल्पिक आगम “पिंडनिर्युक्ति” को यहाँ समाविष्ट तो किया है, लेकिन उनका मुद्रण-स्थान बदल गया है|

[५] “कल्प(बारसा)सूत्र” को भी मूल आगममंजूषा में सामिल किया गया है| -मुनि दीपरत्नसागर

: Address:-

Mnui Deepratnasagar,
MangalDeep society, Opp.DholeshwarMandir,
POST:- THANGADH Dist.surendranagar.
Mobile:-9825967397 jainmunideepratnasagar@gmail.com

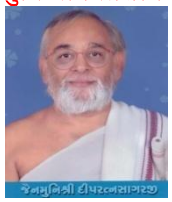

श्रीकप्पवडिंसिया-जति णं भंते ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं उवंगाणं पढमस्स वग्गस्स निरयावलियाणं अयमट्ठे पं० दोच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स कप्पवडिंसियाणं समणेणं जाव संपत्तेणं कइ अज्झयणा पं०?, एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं कप्पवडिंसियाणं दस अज्झयणा पं० तं०-पउमे महापउमे भद्दे सुभद्दे पउमभद्दे पउमसेणे पउमगुम्मे नलिणिगुम्मे आणंदे नंदणे, जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं कप्पवडिंसियाणं दस अज्झयणा पं० पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स कप्पवडिंसियाणं समणेणं भगवया जाव के अट्ठे पं०?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं० चंपा नामं नयरी होत्था, पुण्णभद्दे चेइए, कूणिए राया, पउमावई देवी, तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रन्नो भज्जा कूणियस्स रन्नो चुल्लमाउया काली नामं देवी होत्था सुकुमाला०, तीसे णं कालीए देवीए पुत्ते काले नामं कुमारे होत्था सुकुमाले०, तस्स णं कालस्स कुमारस्स पउमावई नामं देवी होत्था सोमाला जाव विहरति, तते णं सा पउमावई देवी अन्नया कयाई तंसि तारिसगंसि वासघरंसि अब्भिंतरतो सचित्तकम्मे जाव सीहं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धा, एवं जम्मणं जहा महाबलस्स जाव नामधिज्जं, जम्हा णं अम्हं इमे दारए कालस्स कुमारस्स पुत्ते पउमावईए देवीए अत्तए तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधिज्जं पउमेत्ति २, सेसं जहा महाबलस्स, अट्ठओ दातो, जाव पासायवरगते विहरति, सामी समोसरिए, परिसा निग्गया, कूणिते निग्गते, पउमेवि जहा महब्बले निग्गते धम्मं सोच्चा तहेव अम्मापितिआपुच्छणा जाव पव्वइए, अणगारे जाए जाव गुत्तबंभयारी, तते णं से पउमे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमादियाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ त्ता बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम जाव विहरति, तते णं से पउमे अणगारे तेणं ओरालेणं जहा मेहो तहेव धम्मजागरिया चिंता एवं जहेव मेहो तहेव समणं भगवं० आपुच्छित्ता विउलं जाव पाओवगते समाणे तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं, बहुपडिपुण्णाइं पंच वासाइं सामन्नपरियाए, मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आणुपुव्वीए कालगते, थेरा ओतिन्ना, भगवं गोयमे पुच्छइ, सामी कहेइ, जाव सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइय० उड्ढं चंदिम० सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववन्ने दो सागराइं, से णं भंते ! पउमे देवे तातो देवलोगातो आउक्खएणं पुच्छा, गो०! महाविदेहे वासे जहा दढपइन्नो जाव अंतं काहिति, एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं कप्पवडिंसियाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्तिबेमि । २१ ॥ पउमज्झवणं ९-१ ॥ जइ णं भंते ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं कप्पवडिंसियाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पं० दोच्चस्स णं भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पं०?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं० चंपा नामं नयरी होत्था, पुन्नभद्दे चेइए, कूणिए राया, पउमावई देवी, तत्थ णं चंपाए नयरीए सेणियस्स रन्नो भज्जा कोणियस्स रन्नो चुल्लमाउया सुकाली नामं देवी होत्था, तीसे णं सुकालीए पुत्ते सुकाले नामं कुमारे, तस्स णं सुकालस्स कुमारस्स महापउमा नामं देवी होत्था सुकुमाला०, तते णं सा महापउमा देवी अन्नदा कयाई तंसि तारिसगंसि एवं तहेव महापउमे नामं दारते जाव सिज्झिहिति, नवरं ईसाणे कप्पे उववाओ उक्कोसट्ठिइओ, एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं०॥ महापउमज्झयणं ९-२ ॥ एवं सेसावि अट्ठ नेयव्वा, मातातो सरिसनामाओ, कालादीणं दसण्हं पुत्ता आणुपुव्वीए, 'दोण्हं च पंच चत्तारि तिण्हं तिण्हं च होंति तिन्नेव। दोण्हं च दोण्णि वासा सेणियनत्तूण परियातो ॥ १ ॥ उववातो आणुपुव्वीते पढमो सोहम्मे बितितो ईसाणे ततितो सणंकुमारे चउत्थो माहिंदे पंचमओ बंभलोए छट्ठो लंतए सत्तमओ महासुक्के अट्ठमओ सहस्सारे नवमओ पाणते दसमओ अच्चुए, सव्वत्थ उक्कोसठिई भाणियव्वा, महाविदेहे सिद्धी । २२ ॥ ९, ३-१० ॥ कप्पवडिंसियाओ समत्ताओ, बितितो वग्गो दस अज्झयणा ९